आंगन के पार द्वार

अज्ञेय काव्य विवेचन
(खण्ड-१)

डॉ. सुरेश चंद्र पाण्डेय

आँगन के पार द्वार

अज्ञेय काव्य विवेचन

(खण्ड-9)

डॉ. सुरेश चन्द्र पाण्डेय

अव. प्राप्त रीडर-अध्यक्ष, हिन्दी विभाग

डी.ए.वी.पी.जी कॉलेज

आजमगढ़ (उ.प्र.)

विषय-क्रम

प्रस्तावना		3
वस्तु-भाव विवेचन		5
कविताओं का वर्गीकरण		
1.	जीवन-दृष्टि	6
2.	पाठक से संवाद	10
3.	अतीत एवं स्मृतियों को सँजाने वाली रचनाएँ	11
4.	आध्यात्मिक/ भक्ति-संवेदना प्रधान रचनाएँ	14
5.	प्रेम	21
6.	प्रकृति :	22
7.	कवि-व्यक्तित्व:कवि-कर्म-रचना की मर्यादा	26

आँगन के पार द्वार

प्रस्तावना :

सन् 1964 में साहित्य अकादेमी द्वारा पुरस्कृत रचना। पुरस्कार के संबंध में अज्ञेय से अनेक प्रश्न पूछे गए। उनके द्वारा दिये गए उत्तर का महत्वपूर्ण अंश इस प्रकार है –

'हर कृतिकार कृति के द्वारा मुक्त होता है। अगर उस मुक्ति का लाभ और बोध उसको नहीं होता, तो फिर उसने जो लिखा है, वह रचना नहीं है। अगर होता है तो जहाँ तक रचना का प्रश्न है, वह निष्पत्ति पा चुकी है। xx जहाँ तक मेरा अपना प्रश्न है, मैं अभी तक तो यही मानता हूँ कि मेरी सर्वोत्तम रचना अबसे अगली रचना होगी। ऐसा न मानूँ तो आगे लिखना थोड़ा और कठिन हो जाये। और फिर यह भी तो है कि जो लिख दिया जाता है वह लिखे जाने में ही पराया हो जाता है। तब उसको श्रेष्ठ तो क्या 'अपना' भी मानना कठिन हो जाता है। ‘’मैं सच लिखता हूँ लिख-लिख कर सब झूठा करता जाता हूँ।'[1]

'अरी ओ करुणा प्रभामय' अज्ञेय के काव्य-विकास की एक महत्त्वपूर्ण मंजिल है-काव्य-वस्तु और काव्य-भाषा दोनों ही दृष्टियों से। 'आँगन के पार द्वार' उसी का आगे विस्तार है।[2]

‘आँगन के पार द्वार' का प्रकाशन वर्ष 1961 है। लेकिन सदानीरा-2 की क्रम-सूची में सन् 1962 की 5 रचनाएं तथा सन् 1963 की 6 रचनाएँ भी इसमें शामिल की गयी हैं। पूर्व में अप्रकाशित 3 रचनाओं; ‘चक्रान्त शिला' श्रृँखला की 27 रचनाओं को लेकर इस संग्रह में (सदानीरा-2 के अनुसार) कुल 55 रचनाएँ आती हैं।

'अरी ओ करुणा प्रभामय' का कवि जापान के एक बुद्ध-मंदिर में प्रतिष्ठित पत्थर दीप की लजीली

---

[1] जोग लिखी पृष्ठ, 126,127,129

[2] अज्ञेय: अपने बारे में (रेडियो-जीवनी)